

**अकल्पित वि.** (तत्.) 1. जिसकी कल्पना न की गई हो, अकाल्पनिक 2. अकृत्रिम, प्राकृतिक, सहज।

**अकल्प्य वि.** (तत्.) जिसकी कल्पना न की जा सके, अकल्पनीय, कल्पनातीत, कल्पना से परे।

**अकल्मष पुं.** (तत्.) दोष का अभाव, पापविहीनता  
**वि.** 1. पाप रहित, निष्पाप 2. शुद्ध, पवित्र।

**अकल्याण पु.** (तद्.) अहित, अमंगल **वि.** (तत्.) अशुभ, अमंगलकारी।

**अकल्पीयत स्त्री.** (तत्.) अल्पसंख्यक वर्ग।

**अकवच वि.** (तत्.) बिना कवच का, कवच-रहित।

**अकवन पुं.** (देश.) आक, मदार, एक क्षुप/वृक्ष जिसके पत्ते कुछ मोटे तथा बड़े-बड़े होते हैं, इस पर श्वेत अथवा कुछ-कुछ जामुनी वर्ण के पुष्प गुच्छों में लगते हैं, आक का पत्ता तोड़ने पर वृक्ष से गाढ़ा-सा दूध निकलता है। यह विषैला होता है, इसके पुष्प शिवजी को चढ़ाए जाते हैं, इसके अनेक औषधीय उपयोग हैं।

**अकविता स्त्री.** (तत्.) 1. जो कविता न हो, जिसमें काव्यत्व न हो 2. आधुनिक युग की छंदमुक्त कविता की एकधारा-विशेष जिसमें छंदोबद्धता, रसालंकार, अभिजातता आदि की अपेक्षा कथ्य की अकृत्रिम अभिव्यक्ति को स्थान दिया जाता है।

**अकशेरुकी वि.** (तत्.) प्राणि. वे जंतु जिनमें रीढ़ की हड्डियाँ नहीं होती जैसे- प्रोटोजुआ, कृमि, कीट, शंख आदि तु. कशेरुकी।

**अकसना अ.क्रि.** (देश.) 1. अकस रखना, मनोमालिन्य रखना 2. विरोध अथवा शत्रुता करना, वैर रखना 3. ईर्ष्या-भाव रखना 4. स्पर्धा/होड़ करना, बराबरी करना, आँट करना।

**अकसर वि.** (अर.) दे. अक्सर।

**अकसीर स्त्री.** (अर.) वह रस या भस्म जो नजले की अचूक दवा है, इक्सीर **वि.** बहुत गुणकारी, रोगनाशक।

**अकस्मात् क्रि.वि.** (तत्.) 1. अचानक, अनायास, सहसा, आकस्मिक रूप से, एकदम 2. अकारण।

**अकस्मात्र क्रि.वि.** (तत्.) 1. अचानक, अनायास, सहसा 2. संयोग वश, दैवयोग से अपने आप।

**अकह क्रि.वि.** (तद्.) 1. अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वचनीय 2. बुरी, अनुचित, मुंह पर न लाने योग्य।

**अकहानी स्त्री.** (तद्.) 1. जो कहानी न हो 2. कहानी लिखने की आधुनिक युग की एक धारा-विशेष जिसमें कथा-विधा के अनिवार्य तत्वों की अपेक्षा कथ्य के सीधे चित्रण को अपनाया जाता है **वि.** न कहने योग्य।

**अकांड वि.** (तत्.) 1. डाल या शाखा के बिना 2. अकस्मात्, सहसा 3. अकारण।

**अकांडछेदन पुं.** (तत्.) काव्य. एक प्रकार का रस-दोष, किसी वर्णन में अचानक रस का विच्छेद कर उसके विरोधी रस को ले आना, अनवसर रस-भंग कर काव्य के प्रवाह में विघ्न उपस्थित करना, रस में गतिरोध करना।

**अकांडजात चि.** (तत्.) अकस्मात् उत्पन्न हुआ, अकारण उत्पन्न हुआ।

**अकांडप्रथन पुं.** (तत्.) काव्य. रस दोष का एक प्रकार, प्रस्तुत रस की उपेक्षा कर अथवा प्रस्तुत रस को छोड़कर, अप्रस्तुत रस का विस्तार करना, असामयिक/अनवसर रस-वर्णन।

**अकांत वि.** (तत्.) 1. जो मनोरम न हो, जो शोभनीय न हो 2. जो प्रिय न हो, अप्रिय।

**अकाज वि.** (तद्.) 1. कार्य का न होना 2. कार्य में हानि 3. हर्ज, विघ्न, बिगाड़ 4. अकार्य, बुरा काम, अपकर्म **क्रि.वि.** (अ+काज) बिना काम के, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

**अकाट्य वि.** (तत्.) जिसकी काट न हो, न काटने योग्य, दृढ़, मजबूत, अकाट जैसे- अकाट्य तर्क।